Impact Factor 3.025

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-IV ISSUE-IV APR. 2017

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

साहित्य और सिनेमा

डॉ. संतोष रायबोले
(हिंदी विभागाध्यक्ष)
कला व वाणिज्य महाविद्यालय फोंडाघाट,
त. कणकवली,जि. सिंधुदुर्ग, 416601

साहित्य और सिनेमा कला और मनोरंजन के दो महत्वपूर्ण माध्यम हैं। साहित्यकार और दिग्दर्शक समाज की ही उपज होते हैं। सामाजिक प्रतिबध्दता की भूमिका का र्निवहन वे अपने-अपने ढंग से करते हैं। साहित्य समाज का दस्तावेज है तो फिल्मकार कमल स्वरुप सिनेमा के सन्दर्भ में कहते है, "सिनेमा अनुभूति और संवेदना, व्यष्टि और समष्टी के सम्बन्ध का विज्ञान है। विभिन्न नाट्य एवं ललित कलाओं का सम्मिश्रण है। किसी घटना के काल और दिक् के आयामों का रुपांकन है।" सिनेमा प्रेम से लेकर हिंसा, हास्य, समाज, राजनीती परिवार सभी को अपने आगोश में लिए है। डाक्युमेंट्री फिल्म तो सूचना और शिक्षा का सशक्त आधार है।

प्राचिनतम कलाओं में साहित्य और आधुनातम में सिनेमा का अपना महत्व है। मानवी सम्वेदनाओं का अन्वेषण दोनों की मूल प्रवृत्ति है। सिनेमा आज सबसे अधिक सशक्त माध्यम बना है। जो आधुनिक मनुष्य की कलात्मक रुची का अविष्कार है। वैचारीक और सामाजिक मूल्यों की पहल सिनेमा की देन है। समाज को बनानेअथवा बिगाडने का कार्य साहित्य और सिनेमा के हिस्से आया है।

साहित्य और सिनेमा देशगत समाज का परिदृश्य है। समाज और राष्ट्र निर्माण में साहित्य और सिनेमा की अह्म भूमिका रही है।

साहित्य और सिनेमा मनुष्य की जरुरत है। जीवन जीने की प्रेरणा और आनंद इन्ही के द्वारा मिलता है। सूचना, संदेश, मनोरंजन आदि के वे संवाहक है। समाज में बदलाव की भूमिका साहित्य और सिनेमा अख्तियार करता है। साहित्य और सिनेमा मरणशील व्यक्तियों को भी अमरत्व प्रदान कर सुरक्षित रखता है। बशर्ते इनमें महानतम गुणों की अनिवार्यता हो। देश और दुनिया को बदलानेवाले महानुभवों को सुरक्षित रखने का महत्तम् कार्य कलाओं ने ही किया है जिसमें साहित्य और सिनेमा (माध्यम) अपना योगदान देता है। बाहरी दुनिया के साथ-साथ अंतस की दुनिया भी इसमें झलकती है।

साहित्य और सिनेमा में राष्ट्रनिर्माण और मूल्यन्वेषण होता है वह समाज का पथदर्शक है। "साहित्य के केंद्र में यदि राष्ट्र नहीं उसकी अस्मिता नही, उसकी अपनी जमीन नहीं और उसकी अपनी मूल्यगत पहचान नहीं तो उसे साहित्य नहीं, अपितुमनुष्य का गैर आवश्यक उत्पाद मात्र ही माना जाएगा।" समाज के उत्थान-पतन का र्निधारण साहित्य करता है। अदम्य इच्छाशक्ति का स्त्रोत साहित्य है। इसलिए तो वह मनुष्य के सर्वव्यापि जीवन का अभिव्यक्तिकरण है। साथ हि वह समाज के गुण-दोष, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय आदि का संवाहक और निर्णायक है। वह स्थायी परिवर्तन का पोषक है।

सामाजिक परिवर्तन की आशा साहित्य से अधिक है। कबीर का डंके की चोट पर खरी-खोटी सुनाना सनातनता को चुनौति है, प्रेमचंद्र का सर्वहारा वर्ग हिमायती स्वैर्य्या सामाजिक चिंता को अधिक जाहिर करता है, "हम साहित्य को केवल मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं समझते। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधिनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो। जो हम में गीत, संघर्ष और बेचैनी पैदा करें, सुलाये नही।' साहित्य के द्वारा समाज का उत्थान हों, वैषम्य और उत्पीडन का निष्कासन उसका मूल-भाव होना चाहिए। स्व से ऊपर उठकर मानव मुक्ति के साझेदार बनें यही ध्येय है साहित्य का, समाज के निर्माण में साहित्य जवाबदेह है।

आधुनिक जनसंचार माध्यमों में सिनेमा नायक है। इसका कैनवास मानव जीवन के संपूर्ण अंगो तक फैला है। सिनेमा का सौ साल का दौर समग्र मानवी सभ्यता और संस्कृति का लेखा-जोखा है।

सिनेमा ने कई पीढियों को बनाया और कर्मोवेश में बिगाडा भी है । और कईयों से साक्षात्कार भी कराया है । सिनेमा नवन्मेषणशालीनी की तरह देश और समाज को आकार देता है। समाज का समग्र रुप दर्शाता है "सिनेमा की सार्थकता उस बदलाव से जुडी होती है। जो उसके प्रभाव से व्यक्ति परिवार और समाज में दिखाई देती है। भारतीय सिनेमा, विशेषकर हिंदी सिनेमा इस कसौटीपर खरा उतरा है। बॉलिवूड ने हमें ही नही हमारे देश व समाज को अपने समय के हिसाब से फैशन करना सिखाया, सामाजिक बदलाव का स्विकार करने की समझ दी, जोर-जुल्म के खिलाफ इन्कलाब का जज्बा दिया और हमारी भावनाओं को दृश्य-शब्द दिए" सामाजिक समस्याओं को उठाकर परिवर्तन की पहल सिनेमा का मुख्य लक्ष्य रहा है।

शासन-प्रशासन पर अंकुश रखने का कार्य सिनेमा करता रहा है। आजादी के पश्चात राष्ट्रवाद का बोलबाला सिनेमा के अंतस में है। वैचारिक मानस के निर्मिती हेतु सिनेमा प्रयास करता है। जो लोकप्रिय और रचनात्मक कार्य का माध्यम बना है। प्रतीकों को गढकर जादुई दुनिया का निर्माण करता है। लाखों-करोडों लोगों को एक साथ सोचने के लिए मजबूर करने की क्षमता सिनेमा में है।

भारतीय और वैश्विक संस्कृति को नया आयाम सिनेमा ने दिया है। सिनेमा को आज कला के रुपमें मान्यता मिली है। न केवल कला बल्कि सभी कलाओं का नायकत्व प्रदान किया गया है। आज इस सिनेमा को यांत्रिक कला कहा जा सकता है, "सिनेमा में विज्ञान की शक्ति और कला की सुंदरता है जो बुध्दि को खाद्य देती है और हृदय को आंदोलित करती है।" मनुष्य के संम्पूर्ण व्यक्तित्व का पोषकत्व उसमें होता है।

सिनेमा कला-भिव्यक्ति का ऐसा समुच्चय है जिसमें सभी कलाएँ समाहित है। जैसे साहित्य, चित्र, वास्तु, संगीत, नाट्य, आदि की समरसता का अविष्कार सिनेमा में है। इसके पश्चात वह अपनी स्वतंत्र कला कीमौलिकता भी संभाले है। सभी कलाएँ सिनेमा से प्रभावित है और सिनेमा भी ग्राहक की अविवार्यता को समझता है। दोष रहित गुण सहित समाज निर्मिती में सिनेमा अपनी धार देता है। सिनेमा हमारे जीवन शैलीका हिस्सा बना है। समाज से निकलकर समाज सापेक्षता उसका गुण है। कई पीढियों का ऐतिहासिक जगत वह हुबहु खडा करता है, "हिंदी सिनेमा समाज का एक प्रामाणिक और वैज्ञानिक दस्तावेज भले न हो लेकिन एक समाज उसके भीतर से रिफ्लेक्ट होता है। हम सभ्यता के और समय के जिस बिंदु परखडे है वहां सिनेमा हमपर असर डालता है। हमारी जिंदगी को गढने-बिगाडने की कोशिश करता दिखाता है। साथ ही दृश्य और श्रवण का यह माध्यम हमारी ज्ञानेन्द्रियों से अनुभूत नब्बे प्रतिशत सूचनाएँ मस्तिष्क तक पहुंचाने में सक्षम होता है। निश्चय ही फिल्में वह माध्यम हैं जो समाज में दर्पण, दीपक और दिग सूचक तीनों की भूमिका निभाती है।" इससे जाहिर होता है सिनेमा की लोकप्रियता और दायित्वबोध।

केवल पैसा कमाना ही सिनेमा का उद्देश नहीं, तो उसमें जनधर्मिता अहम् मुद्दा है। रोजमर्रा की जिंदगी, सभ्यता, संस्कृति, इतिहास, भाषा, रिश्ते-नातों का ताना-बाना, राजनैतिक परिप्रेक्ष्य की यथावत दशा-दुर्दशा उसमें अंकित है। समाजव्याप्त जाति, धर्म, पंथ, सामाजिक रुढियाँ, पाखंड, शोषण, बेरोजगारी, बेगारप्रथा, गरीबी, अशिक्षा की समस्या को सिनेमा ने उजागर किया है। साम्प्रदायिक भेदा-भेद पर प्रहार किया है। नये समाज निर्माण कि चिंता सिनेमा में है, "फिल्म जगत ने फिल्मों के माध्यम से समाज में साम्प्रदायिक एवं जातिगत सौहार्द्रका वातावरण बनाने में भी अपनी भूमिका के साथ न्याय किया है, यही नही अनेक व्यवस्थाजन्य समास्याओं जैसे उग्रवाद, नक्सलवाद, आतंकवाद की तह तक पहुंचने तथा जनादेश को समझाने में तथा सामंतवादी व्यवस्था, लालफीताशाही और भ्रष्टाचार के विरुध्द जनाक्रोश एवं विद्रोह को हथियार बना उसके विरुध्द में माहौल बनाने में, साथ ही साथ उनके संभावित समाधानों को दिखाने में भी फिल्म जगत ने अमूल्य योगदान दिया है।" भाईचारें में फिल्म की हिमायत महत्वपूर्ण है। आज नीजिकरण,

उदारीकरण और भूमन्डलीकरण के दौर में भी तमाम दबावों के चलते पारिवारिकता को बचाने का भरकस प्रयास सिनेमा कर रहा है। इन्सान को ग्राहक की अपेक्षा इन्सान बनाये रखने में उसका कोईसानी नही। रिश्तों की जरुरत पर वह जोर देता है।

सिनेमा पर यह आरोप है कि, उसने नारी को केवल और केवल उपभोग की वस्तु बनाया पर दुसरी ओरनारीकी गरीमा और महत्व को नकारा नहीं जा सकता जो सिनेमा की ही देन है। भाषाईएकता और मेलजोल में सिनेमा मुख्य सूत्रधार है, जैसे अंचल, क्षत्रिय, देश राष्ट्र और आंतर्राष्ट्रीय भाषा तक इसकीव्यापकताहै। आज राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सिनेमा मौलिक काम कर रहा है। केवल देशमें हीनही तो दुनिया ने इसका लोहा माना है।

आज भारतीय सिनेमा दुनिया में गल्ला जमा रहा है। पाक थिएटर भारतीय फिल्मों के बगैर गोडाउन बनने की कगार पर है। सर्जिकल स्ट्राईक के उपरांत जब पाक सरकारने भारतीय फिल्मों पर प्रतिबंध लगाया था तब की दुर्दशा की आलोचना करते फिल्मी दुनिया से जुडे लोगों को सडक पर उतरकर सरकार के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन के व्दारा भारतीय फिल्मों को प्रतिबन्धमुक्त करना पडा वर्णा पाक फिल्मी जगत का विध्वंसतय था।

साहित्य और सिनेमा समाज की उपज है और समाज को ही प्रभावित करता है। सामाजिक समस्या के उत्तर हेतु इसका लेखन और दिग्दर्शन होता है। वे एक दूसरे के सहाय्यक है। देश विकास की गतिशीलता में सरकारी और सामाजिक संस्थाओं और भागिदारियों का अंकन इनमें होता है और प्रेरणा भी दी जाती है। ये दोनों कलाएँ करोडों लोगों को एक साथ प्रभावित और बदलाव का साझेदार बनाती है। साहित्य का पाठक पढ़ा-लिखा वर्ग है तो सिनेमा सभी वर्गो को संदेश देता है, लोग सहज उसका अनुकरण करते है। कमोबेश में बदलाव के हिस्सेदार भी बनते है।

समाज की समस्या और उपाय दोनों का वर्णन सहजता में फिल्म और साहित्य करता है इसलिए तो आज भी लाखों फिल्में और पुस्तके देखी और पढ़ी जा रही है। दिग्दर्शक और साहित्यकार दोनों दूनिया कासंचलन करते है। समाज को वाणी देने वाले साहित्यकार के किरदारों को दिग्दर्शक पर्दे पर अमरत्व प्रदान करता है। साहित्य और फिल्म में कांतासंम्मित उपदेश युजे और जीवन के सबक होते है। साहित्य के बगैर समाज और समाज के अभाव में साहित्य और सिनेमा अकल्पनीय है।

संक्षेप में – साहित्य शब्दाश्रीत तो सिनेमा दृश्य-श्राव्य है फिरभी समाजसुधार की ललक दोनों के मूल में है। साहित्य कलम का तो सिनेमा कैमेरे रंगछटाओं का आधार लेकर पूर्णत्व प्राप्त करता है। साहित्य बुध्दितत्व पर आश्रित है तो सिनेमा कला और तकनीक का अविष्कार है। प्रस्तुतीकरण की भिन्नता के पश्चात मुलभूत बिंदुओं में वे एक दूसरे के पुरक है। दुनिया के इतिहास में यह पाया गया कि साहित्य और सिनेमा के कारण ही लोगों ने अन्याय-अत्याचार के खिलाफ क्रांतियाँ की है। क्रांति को जमीन देने का कार्य साहित्य और सिनेमा करता है।

संदर्भ :-

1. कमलस्वरूप फिल्मकार– सिनेमा अभिव्यक्ति का नहीं अन्वेषण का माध्यम है-(हंस हिंदी सिनेमा के सौ साल, फरवरी2013), पृ.122
2. प्रो.शुक्ल त्रिभुवननाथ्,संपादकिय(साक्षात्कार, अप्रैल 2014) पृ.06
3. चोपडा धनंजय, क्यो न देखे फिल्में बार-बार (मीडिया विमर्श सिनेमा) विशेषांक-२, मार्च, 2013) पृ. 13
4. डॉ. तिवारी अर्जुन, आधुनिक पत्रकारिता पृ. 222
5. डॉ. सिंह देवेंद्र नाथ, भारतीय हिन्दी सिनेमा की विकास यात्रा पृ. 57, 58
6. व्दिवेदीसुमित, सामाजिक दायित्व निभाना भी जरुरी (मीडिया विमर्श, सिनेमा विशेषांक-२, मार्च, 2013) पृ.30